प्रातः क्लास 27-5-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह तो जरूर समझते हैं बच्चे बाबा पास हम जाते हैं। रिफ्रेश होने लिए। वहां सेन्टर जाते हो तो ऐसे तो ऐसे नहीं समझ सकते। तुम बच्चों की बुधि में है बाबा मधुबन में है। बाप की मुरली चलती ही है बच्चों के लिए। बच्चे समझेंगे हम जाते हैं मधुबन में मुरली सुनने। मुरली मुरली अक्षर कृष्ण के लिए समझ लिया है। मुरली का अर्थ कोई और है नहीं। तुम बच्चों को अच्छी तरह से समझ आई है। बाप ने समझाया है और तुम फील करते होबरोबर हम बहुत बेसमझ बन पड़े थे ऐसे कोई भी अपन को बेसमझ समझते नहीं हैं। यहां जब आते हैं तब निश्चयबुधि होते हैं बरोबर हम बेसमझ बन गये थे। तुम सतयुग में कितने समझदार थे। विश्व के मालिक थे। कोईमूर्ख थोड़े ही विश्व का मालिक बन सकते हैं। यह ल०ना० मालिक थे नाम इतने समझदार थे तब तो भक्ति-मार्ग में भी पूजे जाते हैं। जड़ चित्र कुछ बोल नहीं सकती। शिव बाबा की पूजा करते है वह कब बोलते हैं क्या। शिव बाबाएक ही बार आकर बोलते हैं। पूजा करने वालों को भी पता नहीं है कियह ज्ञान सुनाने वाले हैं। कृष्ण के लिए समझते हैं उसने मुरली बजाई। जिसकी पूजा करते हैं उनकी आक्युपेशन को बिल्कुल जानते नहीं। तो पूजा आद निष्फल ही हो जावेंगे जब तक बाप आये। ऐसे भी नहीं भक्ति से भगवान मिलता है। नहीं। भक्ति की महिमा नहीं करनी चाहिए। भक्ति से दुर्गति को पाते हैं तब ही भगवान आते हैं सदगति करने लिए। भक्त लोग ऐसे नहीं समझते हैं। तुम समझते हो भक्ति से दुर्गति होती है तब तो बाप आते हैं। भक्ति है ही दुर्गति। तब ही भगवान आते हैं सदगतिदेने। नाम भी है स्वर्ग और नर्क। नर्क में ही भक्ति है। जब रावण-राज्य शुरू होता है तब भक्ति होती है। यह बात है बिल्कुल नई। शास्त्रों में यह है नहीं। शास्त्र तो तुम ने बहुत पढ़ी। ऐसी बहुत मातायें भी हैंजिन्होंने वेद-शास्त्र आद पढ़ी हैं। जिन्हों ने नहीं पढ़ी है वह भी समझते हैं अच्छा हुआ जो हमने नहीं पढ़ी। अभी बच्चे समझते हैं बरोबर सच्चा पढ़ाने वाला एक ही बाप है। बाप को कहा जाता है सत्य। नर से नारायण बनने की सच्ची कथा सुनाते हैं। अर्थ तो ठीक है। सत्य बाप आते हैं, अभी नर से ना० बनना है तो जरूर सतयुग स्थापन करेंगे ना। पुरानी दुनिया कलियुग में थोड़े ही बनेंगे। कथा सुनने समय यह कोई की बुधि में नहीं होता है कि हम नर से ना० बनेंगे। अभी तुम समझते हो हम सत्य बाप के पास आये हैं। बाप हमको नर से नारायण बनने का राजयोग सिखलाते हैं। यह भी कोई नई बात नहीं। बाप समझाते हैं फिर कल्प2 आकर समझाता हूं। कितनी बड़ीभारी भूल की है। कितने पत्थर बुधि बन गये हैं। यह भी नहीं समझते युगे2 बाप आकर कैसे राजयोग सिखावेंगा। यह तो हो नहीं सकता। वह तो आवेंगे ही तब जब नई दुनिया की स्थापना हानी होगी। युगे2 कैसे आवेंगे। इतने बड़े बिद्वान आचार्य पंडित आद है कुछ भी नहीं समझते हैं। सभी काम चिक्षा पर चढ़ कर काले बन पड़े हैं। तुम समझा सकते हो। ब्रहमा का चित्र दिखाकर तुम समझा सकते हो। यह रथ है। यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। पतित। अभी यह भी पावन बन रहा है। यह भी पावन बनते हैं हम भी बनते हैं। सिवाय योगबल के कोईपावन बन नहीं सकता। विकर्म विनाश हो न सके। पानी में स्नान करने से कोई पावन बन नहीं सकते। यह है योग अग्नि। पानी होता है आग को बुझाने वाला। आग होती है जलाने वाली। तो पानी कोई आग तो नहीं है जिस से विकर्म विनाश हो। बड़े2 विद्वान आद हैं सब से जास्ती गुरु तोइसने की है। यह समझाते हैं हम ने गुरु तो बहुत किये शास्त्र आद भी बहुत पढ़े। इस जन्म में जैसे पंडित बना है। यह भी बाप ने समझाया है जो अपन को बच्चे समझते हैं तो इस जन्म में जो कुछ पाप आद किया है तो वह आकर बतानी चाहिए। जब कि सम्मुख बाप आया है। तो पाप-कर्म बता देनाचाहिए तो हलका हो जावेंगे। इस जन्म में हल्के हो जावेंगे। फिर पुरुषार्थ करना हैजन्म-जन्मान्तर के पाप काटने का। जरूर जन्म-जन्मान्तर पाप कर्म किसे होंगे जिसको बोझा सिर पर है। बाप योग की बात समझाते हैं। योग से ही विकर्म विनाश होंगे। यह बातें तुम अभी सुनते हो। सतयुग में यह बातें कोईसुना न सके। यह सारा ड्रामा बना हुआ है। सेकण्डव सेकण्डयह सारा ड्रामा फिरता रहता है। एक सेकण्ड न

मिले दूसरे से। सेकण्ड व सेकण्ड आयु कमती हो जाती है। अभी तुम आयु कम हाने की ब्रेक देते हो। और योग से आयु बढ़ाते हो। अभी तुम बच्चों को अपनी आयु को बड़ा बनाना है। योगबल से। बाबाबा योग के लिए बहुत जोर देते रहते हैं। परन्तु कई समझते ही नहीं हैं। कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। तब बाबा कहते हैं योग कोई और बात नहीं। यह है याद की यात्रा। बाप को याद करते2 पाप कटते जावेंगे। अन्त मते सो गति हो जावेंगी। इस पर एक मिशाल भी देते हैं। कोई ने किसको कहा तुम तो भैंस हो। तो वह समझने लगा मैं भैंस हूं बोला इस दरवाज़े से निकलो। बोले मैं×मैं भैंस हूं कैसे निकलूं। सचमुच भैंस बन गये। एक यह मिशाल बैठ बनाया है। बाकी ऐसे कोई है नहीं। यह कोई यर्थात मिशाल नहीं हैं। हमेशा रियल बात पर मिशाल बनाया जाता है। परन्तु यर्थात मिशाल है नहीं। इस समय तुमको बाप जो समझाते हैं उनकी फिर त्योहार भक्ति मार्ग में मनाई जाती है। कितने मेले-मलाखड़े आद होते हैं। बाकी इस समय जो कुछ होता है उनकी त्योहार बन जाती है। तुम यहां कितने स्वच्छ बैठे हो। मेले-मलाखड़े में कितने मैले हो जाते हैं। मिट्टी बैठ कर जोर से मलते हैं समझते हैं पाप बहुत मिट जावेंगे। बाबा का खुद यह सभी किया हुआ है। नासिक में पानी बहुत गंदा होता था वहां जाकर मिट्टी मलते थे समझते थे पाप नाश हो जावेंगे। फिर उस मिट्टी कोसाफ करने लिए पानी ले आते थे। ऐसे काम करते थे। अभी तो समझते हैं कितने लम्बे-चोड़े मुर्ख थे। पंडित लोगकितना मुर्ख बनाते थे। कितना गन्दा पानी, वहां ढेर के ढेर जाते थे। विलायत में भी बड़े 2 महाराजाएं आद× गंगा का जल मटकाभर कर ले जाते थे। फिर स्टीमर में जाता रहता था। आगे एरोपलेन मोटरें, आद नहीं थे। बिजली भी नहीं थी। 75 बर्ष में क्या2बन गया। सतयुग में भी ऐसे सायंस काम में आते हैं। वहां तो महल आद बहुत जल्दी बनेंगे। अभी तुम्हारी पारस बुधि बनती हैं। तो वहां यह बनानेकरने में देरी नहीं लगती है। जैसे यहां मिट्टी की ईंटें बनते हैंवहां सोने के होते हैं। इस पर माया मच्छन्दर का खेल भी है। यह तो उन्हों ने झूठ, मूठ नाटक बैठ बनाई है दिखाने लिए। वे बरोबर स्वर्ग में सोने की ईंटें हैं। उनको कहा ही जाता है गोल्डेनएज। इनको कहा जाता है आसरनएज। वहां सतोप्रधान, यहां है तमोप्रधान। स्वर्ग को तो सभी याद करते हैं। चित्र भी उन्हों के कायम है। कहते भी हैं आदी सनातन धर्म। फिर हिन्दु धर्म कह देते देवता के बदली हिन्दु कह देते हैं। क्योंकि विकारी है तो देवता कैसे कहे। तुम कहां भी जाते हो तो यही समझाते रहो क्योंकि तुम हो मैसेन्जर पैगम्बर। बाप का परिचय हरेक को देना है। कोई झट समझेंगे कि सचमुच तुम ठीक कहते हो। दो बाप है। कोई तो कह देंगे परमात्मा तो सर्वव्यापी है। तुम बच्चे समझते होएक से हद का वर्सा दूसरे से बेहद का वर्सा हमलता है 21 जन्मों के लिए। यह ज्ञान भी तुमको अभी है। वहां यह ज्ञान नहीं रहता। संगम पर ही वर्सा मिलता है जो फिर 21 पीढ़ी जन्म व जन्म तुम राज्य करते हो। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। यह भी अभी मालूम पड़ा है। जो पक्के निश्चय बुधि हैं उनको कोई संशय उठाने की बात ही नहीं। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। शिव बाबा आवेंगे तो सब कुछ वर्सा देंगे। इसलिए बाबा कहते हैं यह बैज बहुत अच्छा है। यह जरूर पड़ा हो। घर2 में मैसेन्जदेना है। फिर कोई माने न माने। विनाश आवेगा तो समझेंगे भगवान आया हुआ है। फिर जिन्हों को तुम ने बैज दिया होगा वह याद करेंगे यह सफेद पोश वालीफरिश्ते कौन थी। सूक्ष्म वतन में भी तुम फरिश्ते देखते हो ना। तुम जानते हो बाबा मामा योगबल से ऐसे फरिश्ते बनेंगे। हम भी बनेंगे। यह सब बाप इन में प्रवेश करडायरेक्ट बैठ डायरेक्शन देते हैं। समझाते हैं। नालेज देते हैं। जो बाबा में नालेज है वह जरूर फरिश्तों में भी होना चाहिए। जब ऊपर में जाते हो तो फिर नालेज का पार्ट पूरा हो जाता फिर जो पार्ट मिला है वह सुख का पार्ट बजाते हैं। और वह नालेज भूल जाते हैं। तुम तो बच्चे कहां भी जाते हो मैसेन्जर की निशानी जरूर चाहिए। भल कोई हंसी करे। इस पर क्या हंसी करेंगे। तुम तो यर्थात बातसुनाते हो। यह बेहद का बाप है। उनका नाम है शिव। वह कल्याणकरी है। आकर स्वर्ग की

स्थापना करते हैं। यहहै पुरुषोत्तम संगम युग। यह सारा ज्ञान तुम बच्चों को मिला है फिर भूलना क्यों चाहिए। तुम बच्चे यहां आते हो मुरली सुन कर जाते हो फिर तुम सुना क्यों नहीं सकते हो। सिर्फ ब्राहमणी को सुनाती है। सुन कर और सुना नहीं सकते तो कहेंगे डल हेडेड बुधि है। एक ब्राहमणी चली जाती है तो कहते रहते हैं हमको ब्राहमणी चाहिए। जैसे कि बुधि मे कुछ बैठता ही नहीं। सिर्फ ब्राहमणी पर आधार क्यों नहीं। बात तोबहुत सहज है। चलते-फिरते बाप को और वर्से को याद करना है। शान्तिधाम और सुखधाम। सन्यासी ब्रहम को याद करते हैं। वह तो घर है ना। याद तो करना है बाप को। ब्रहम रहने का स्थान अलग है। बाप को न जानने कारण वापस कोई जा नहीं सकता। और बाप ने समझाया है आत्मा अविनाशी है। वह कब विनाश नहीं हो सकती। ज्ञान सारा आत्मा में ही हैं। बाबा भी परम आत्मा है ना। तुम भी परमधाम में रहते हो। जहां बाबा रहते हैं। तो ऐसे नहीं कि सिर्फ एक ब्राहणी ही सिर्फ मुरली चलावे और कोई बोल भीन सके। आप समान बनाकर तैयार करना चाहिए। जो बहुत सेन्टर्स सम्भाल सके तब ही बहुतों का कल्याण कर सकेंगे। एक ब्राहमणी चली जाती हैं तो दूसरी क्यों? 5 बर्ष हुये हैं। सेन्टर्स खोले 5 बर्ष में हजामत करते थे क्या। धरणा नहीं की। स्टुडेन्ट पढ़ेंगे नहीं तो कहेंगे यह तो हजाम है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बाबा का नमस्ते। नमस्ते।

रात्रिक्लास 25-5-68 ओमशान्ति आत्म-अभिमानीभव।

मीठे2 बच्चे जब यहां आते हैं समझते हैं हम बाबा के पास जाते हैं। बाबा से सुनते हैं। जब अपने2 सेन्टर पर जाते हैं तो सामने बाप-दादा नहीं बैठते हैं। कहां2 गोप भीचलाते हैं। मुरली तो सहज है। कोई भी धारण करक्लास करा सकते हैं। ऐसे नहीं कि माताओं को ही हेड रखना है। मेल्स भी धारण कर मुरली चला सकते हैं। ब्राहमणियां बैठी तो है। बाबा पूछते हैं कोई मुरली पढ़ कर फिर बाबा के आये हुये मुरली का सार सुनाते हैं। कोई मुरली पढ़ कर सुनाते हैं। जो मुरली हाथ में उठा सुनाते हैं वह हाथ उठावे। जो मुरली हाथ में नहीं उठा कर यानि कि बिगर मुरली के ऐसे ही सुनाते हैं वह भी हाथ उठावे। मुरली हाथ में तो होनी चाहिए। पढ़े हुये हैं फिर भी बैठ सुनाते हैं। कोई मुरली पढ़ कर सुनाते हैं। नम्बरवार तो जरूर हैं। महारथी घोड़े सवार और प्यादे। सभी तो एक्युअल नहीं पढ़ते हैं। कोई तो पढ़ते भी रहते हैं। एडीशन कर रहस्य भी समझाते हैं। रसीली नमूने। सभी ऐसे नहीं समझा सकते हैं। यहां तो बाप बैठे हैं। बाप बच्चों को कहते हैं कोई भी बात में संशय हो, संशय होना न चाहिए। एक बाप ही सभी कुछ जानते हैं। उन स्कूलों में तो अनेक पढ़ने वाले हैं। अलग2 पढ़ाते। यहां तो एक ही पढ़ाते हैं। एक ही एमआबजेक्ट है। इस में प्रश्न पूछने का रहता ही नहीं। सुबह को यहां बैठ बच्चों को याद की यात्रा में मदद करता हूं। ऐसे नहीं सिर्फ तुमको याद करता हूं। सारी बेहद की याद रहती है। तुमको इस याद से ही सारे विश्व को पावन बनाना है। अंगुली तुम किस में देते हो। पवित्र तो सारी दुनिया को बनाना है ना। तो बाप बच्चों पर नज़र रखते हैं। सभी शान्ति में चले जावे। सभी का अटेन्शन खेंचवाते हैं। जिनका योग है वह उठाते हैं। बाप तो बेहद में ही बैठेंगे। मैं आया हूं सारी दुनिया को पावन बनाने। सारी दुनियाको करेन्ट दे रहा हूं। तो पवित्र हो जाये। जिनका योग होगा समझेंगे बाबा अभी बैठ कर याद की यात्रा सिखला रहे हैं। जिनसे विश्व में शान्ति होती है। बच्चों को भी याद किया जाता हैं। वह भी याद में रहते हैं। तो मदद मिलती है। जो अच्छी रीत याद करते हैं वह थोड़े हैं। मददगार बच्चे भी चाहिए ना। खुदाई खिज़मतगार। निश्चय बुधि ही याद करेंगे। तुम्हारी पहले सबजेक्ट है यह पावनबनबन की। गोया तुम बच्चे निमित बनते हो बाप के साथ। बाप को बुलाते हो हे पतित पावन आओ। अभी वह अकेला क्या करेगा। खिज़मतगार चाहिए ना। तुम जानते हो

हम विश्व को शान्ति बनाकर उस पर राज्य करेंगे। ऐसी बुधि होगी तब नशा चढ़ा हुआ होगा। तुम बच्चों को भारत को हेविन बनाना है। तुम जानते हो हम बाप की श्री मत से अपने लिए योगबल ~~श्र~~ से , किस से योग है? ~~सर्व शक्ति~~वान से। उस से मदद ले अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। नशा रहना चाहिए ना। स्थूल जिसमानी बात तो नहीं है। यह हेरूहानी। नई नहीं है। बाप ने समझाय है बच्चे समझते हैं हर कल्प बाप ~~ज्ञ~~= इस रूहानी बल से हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। यह भी समझते हो शिव बाबा ही आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। दुनिया को यह भी पता नहीं है परमपिता परमात्मा नई दुनिय की स्थापना करते हैं। कब कैसे कैसे यह बिल्कुल ही नहीं जानते। गीता में भी आटे में लून है। बाकी तो सभी झू०ही झूठ हैं। बाप आकर सत्य बताते हैं। ~~भारत~~ भारत का योगबल तो नामी ग्रामी हैं। बहुत जाते है भारत का राजयोग सिखलाने। बाप कहते हैं हठयोगी राजयो ग सिखला न सके। परन्तु आजकल तो ढू०तो बहुत हैं ना। सच्च के आगे इमीटेशन बहुत होती है इसलिए सच्च को कोई मुश्किल जान सकते हैं। सभी सतसंग है झूठ की। हठयोगी है। यह तो बाप ही आकर ~~ज्ञ~~ सिखलाते है। राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। बाप कहते हैं कल्प2 ऐसे होता है। अभी तुम नास्तिक से आस्तिक बन गये हो। ऋषि-मुनि आद कहते हम रचयिता को और रचना को नहीं जानते हैं। नेती2 इनका अर्थ भी नहीं जानते हैं। ~~ऋषि~~ मुनि प्राचीन ही नहीं जानते। तो और पास फिर कहां से आया। गीता के ज्ञान को कोई नहीं जानते हैं। यह दादा भी बहुत पढ़ते थे। अभी समझ मिली है जानते हो दुनिया तमोप्रधान है। बिल्कुल ही बेसमझ। भारत समझदार था। भारत पर ही खेल है। दूसरे धर्म कब आते हैं यह भी बच्चे समझते हैं। मूलवतन सूक्ष्मवतन को भी तुम समझ गये हो। तुम जाते हो सूक्ष्मवतन से होकर। ~~ज्ञ~~ जब आते हो तो सूक्ष्म वतन ~~जाने की दस्तक~~ की पहचान ही नहीं रहती। सिर्फ तुम ब्राहमण ही यह नालेज पाते हो। देवताओं को तो यह दरकार ही नही रहती। तुमको सारी विश्व की यह नालेज है। तुम पहले ~~शुद्र~~= शुद्र बर्ण के थे। ब्रहमा कुमारियां बनी तब तो यहनालेज देती हैं। जिस से तुम्हारी डीटी डिनायस्टी स्थापन हो रही है। ब्राहमण कुल फिर सूर्यवंशी चन्द्रवंशी डिनायस्टी स्थापन करते हैं। वह भी यहां संगम युग पर स्थापना करते हैं । और कोई धर्म वाले फट से धर्म स्थापन नहीं करते हैं। उनको फिर गुरु नहीं कहा जा सकता। बाप आकर धर्म की स्थापना करते हैं। बाप कहते हैं अभी सिर पर पर्णा है बाप की याद का जिस में घड़ी2 भूल जाते हैं। पुरुषार्थ भी करते रहे तो धंधा आद भी करते रहे। और याद भी करते रहे: हेल्दी बनने लिए बाप कमाईवड़ी जोर से कराते हैं। ~~इस~~ इस समय सभी को भूलाना पड़े। हम आत्माएं जा रही हैं। सभी को भूलाना पड़े। यह अभ्यास कराई जाती है। खाते हो, क्या बाप को याद नहीं कर सकते हो। कपड़ा सिलाई करते हैं बुधि योग बाप की याद में रहे। किचड़ा तो ~~ज्ञ~~ निकालना ही है। बाबा कहते हैं शरीर निर्वाह लिए भल करो। है तो बहुत सहज। समझ गये हो 84 का चक्र पूरा हुआ। अभी बाप राजयोग सिखलाने आये हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और बच्चों को नमस्ते।

रही हुई पायन्टस। :- यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी इस समय रिपीट होती हैं। कल्प पहले भी ऐसी थी। ~~जो~~ जो रिपीट हो रही है। रिपीटेशन का राज़ इस समय बाप ही समझाते हैं। कहते भी हैं वर्ल्ड रिपीटस। वन गाड वन रिलीजन, कहते हैं ना। वहां ही शान्ति होगी। वह है ~~अद्वैत~~= अद्वैत राज्य। द्वैत माना आसुरी रावण राज्य। भारत पर ही सारा खेल बना हुआ है। भारत का ही आदी सनातन देवी देवता धर्म था फिर ~~ज्ञ~~ पवित्र प्रवृति मार्ग था। फिर बाप आकर पवित्र प्रवृति मार्ग बनाते हैं। हम सो पवित्र देवता थे। फिर कल कमती होती गई। हम सो शूद्र डिनायस्टी में आये। बाप पढ़ाते ऐसे हैं जैसे टीचर लोग पढ़ाते हैं। ~~स्टूडन्ट~~= सुनते हैं। अच्छे स्टूडेन्ट पूरा ध्यानदेते हैं। मिस नहीं करते। यूं पढ़ाई रोज़ चाहिए। बाडली युनिवर्सिटी अपसेन्ट न होना चाहिए। बाबा गुह्य2 बातें सुनाते रहते हैं। अच्छा ओम ।

*::***::*